अथ श्री दादाजीकी विधि संयुक्त चैत्यवंदन स्तवन.

॥ स्तोत्रादि पूजासंग्रह ॥

रमपूज्य जैनधर्मोपदेष्टा न्यायाभोनिधि
विद्वद्वर्य जैनाचार्य कृपाचंद्रसूरिजी
महाराजके शिष्य पं. जीतसागरजीका
सदुपदेशसे छपाके प्रसिद्ध करनार,

मालू-तगामल मानमल.
बाडमेर-मारवाड.

पं । नेमिचन्द्र यतिके प्रबन्धसे
श्री जैन विद्याविजय प्रीन्टींग प्रेसमां
शा. पोपटलाल [illegible]थाशाहे छाप्युं,
रीच[illegible]ड-अमदावाद. नं. ११६
संवत १९७८—सने १९२१.

द्वितियावृत्ति.—प्रत १०००.
किम्मत अमूल्य.

॥ श्री गुरुभ्योंनमः ॥

अथ श्रीदादासाहेबकी पूजा और चैत्य वंदन स्तवन स्तोत्रादि संग्रह ॥



अथ पहली थापना स्थापन करके आवाहनका श्लोक पढे ।

कुलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ।
शमदमऋजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान् ।
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् ।
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥१॥

ऑं ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त श्रीजिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ऑं ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संनिहितो भव वषट् इति संनिधीकरणम् ॥३॥ अथ जलका कलश लेके स्नानकर्ता शुचि होके खडा रहे ॥

अथ स्तुतिप्रारम्भः ।

दोहा—ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ सौधर्म मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट । मिथ्यामततमहरणको, भव्य दिखावन वाट ॥२॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरिमंत्रको जाप । कोटि कियो जब ध्यान

धर, कोटिकगच्छ सुथाप ॥३॥ दश पूर्व्वी श्रुतकेवली, भये वज्रवर स्वाम । तादिनतें गुरुगच्छको, वज्रशाख भयो नाम ॥४॥ चंद्रसूरि भये चंद्रसम, अतिही बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान ॥५॥ वर्द्धमानके पाट पद, सूरि जिनेश्वरमाश । चैत्यवासिकुं जीतकर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥६॥ अणहिल्पुर पाटणसभा, लोक मिले तिहाँ लक्ष । खरतर विरुद्ध सुधानिधि, दुर्लभ राजसमक्ष ॥७॥ अभयदेवसूरि भेय, नवअंगटीकाकार । थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ठ मिटावनहार ॥८॥ श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरू, रचना शास्त्र अनेक । प्रति बोधे श्रावक बहुत, ताके पट्टविशेष ॥९॥ हुंबड श्रावक बापडी, अट्ठारे हज्जार । जैन दयाधर्मी किये,

वरते जैजैकार ॥१०॥ दादानाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास। दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्लमें पतसाहने, हुकम उठाया शीस। मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो बिसवावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा, श्रीजिनकुशल सूरिंद। अकबरकुं परचा दिया, दादा श्रीजिनचंद ॥१३॥ ऐसे दादाच्यारकूं, पजो चित्त लगाय। जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥

चाल दादा चिरंजीवो ए दशी ॥

गुरुराजतणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लछि धणी एआंकणी गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी गुरु सेवकने सानिधकारी गुरु चरणकमलनी बलिहारी गुरु १ संवत

इग्यारे बार शशी बत्तीसे जनम्यां शुभ दि-
वसी श्रावककुल हुंबडनें तुलसी गु० २ जसु
बाछिगसा पितुनाम भणे बाहड्दे माता हर्ष
घणे इकतालीसे दीक्षापभणे गु० ३ गुणह-
तरे वल्लभ पाटधरी गुरु मायाबीजनो जाप
करी गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी गु० ४
मणिधारी जिनचंद उपकारी जिनदत्तसूरिंद-
के पटधारी भये दादा दूजा सुखकारी गु०
५ राशल पितु देल्हणदे माता श्रीमाळगोत्र
बोधन साता दिल्ली पत साह सुगुण गाता
गु० ६ जसु चौथे पाट उद्योत करी जिन
कुशळ सूरिंद अति हर्ष भरी तेरेसे तीसे
जनम धरी गु० ७ जसु जिल्हा जनक
जगत्र जियो वर जैत सिरी शुभ स्व-
पन लियो गुरु छाजेडगोत्र उद्धार कियो

गु० ८ घन सैंतालीसे दीक्ष धरी जिन चंद्र-सूरीश्वर पाटवरी गुणहतरे सूरि मंत्र जाप करी गु० ९ सेवामें बावन वीर खरा जोगणियां चौसठ हुकम धरा गुरु जगमें कइ उपकार करा गु० १० माणक सूरीश्वर पद छाजे जिनचंद्रसूरी जगमें गाजे भये दादा चोथा सुख काजे गु० ११ जिण चांद उगायो उजियारो अम्मावसकी पूनमवालो सब श्रावक मिल पूजन चालो गु० १२ जिण अकबरकूं परचा दीना काजीकी टोपी वश कीना। बकरीका भेद कह्या तीना गु० १३ गंधोदक सुरभि कलश भरी प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी या पूजन कवि ऋद्धिसार करी गु० १४

श्लोकः ।

सुरनदी जलनिर्मलधारकैः प्रबलदुष्कृतदाधनि-

[illegible]रकैः। सकलपल्लव ाठि छतदावकौ [illegible]रिगुरोश्वरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थलाय श्रीजि-नचन्द्र सूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकब्बरेअसुत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनच-न्द्रसूरीश्वराय जलं निर्व्विपामिते स्वाहा॥१॥

अथ द्वितीय केशर चंदनपूजाप्रारंभः।

दोहा—केशर चंदन मृगमदा, कर घन-सार मिलाप। परचा जिनदतसुरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

चाल वीण बाजेकी.

धीनके दयाल राज सार (२) तूं।

आंकणी। आये भरुअच्छ नगर धाम

धूप धू २ बाजते निशान ढोर हर्ष रंग हूं
ह० दी० १ मुसलमान मुगलपूत फौज मौज-
मूं । फोत मोत होगया हायकारसूं हा० दी०
२ सघ्र विघ्र देख आप हुकम दीन यूं । लावो
मेरे पास आस जीवदान दूं जी० ३ दी०
मृतक पूत मंत्रसे उठाय दीन तूं देखके अ-
चंभ रंग दास खासकूं दास खासकूं द० ४
दी० करत सेव भावपूर तुरकराज जूं । छो-
डके अभक्ष्य खान हाजरी भरुं हा० ५ दी०
बीज खीजके पडी भतिक्रमणके मूं । हाथसे
उठाय पात्र ढांक दीन छूं ढा० ६ दी० दा-
मनी अमोळ बोल सिद्धराज तूं । देउं वर
दान छोड बंदकी न क्यूं बंधकीन क्यूं बं० ७
दष नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर मैं
पहूंगी नांह छोड दीन फूं छो० दी० ८ करोगे

निहाल आप पाव पलकनूं रामऋद्धिसार दास चरण छांह लूं न०९ ॥ श्लोक—मलयचन्दनकेशरवारिणा निखिलजाड्यरुजातपहारिणा । सकल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन दत्त० केशरचन्दनं निर्व्विपामिते स्वाहा॥२॥

अथ तिजी पुष्पपूजा.

दोहा—चंपा चमेली मालती, मरूवा अरूम चकुंद । जो चाढे गुरुचरणपर, नित घर होय आनंद ॥१॥ नींद तो गई वादीला मारी. ए चाल—राग मांड । गुरु परतिख सुरतरुप सुरतरूसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं रे सुमति जिन दूजो तो नहीं । गुरुप० सु० गुरुने पूजो तो सही । ए आंकणी । चितोड नगरी वज्रथंभमे विद्या पोथी रहीरे सु० वि० हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी गुरु मिजहाय

ग्रही गु० गुरुपर० १ पुरउज्जयिनी महाका-
लके मंदिर थंभ कहिरे सुम० हेजी सिद्ध-
सेन दिनकरकी पोथी विद्या सरब लही रे
सु० वि० गुरुप० २ उज्जयिनी व्याख्यानबीच-
में श्राविका रूप ग्रहीरे सु० श्रा० हेजी जो-
गनियां छलनेकुं आई सबको खील दई गु०
॥३॥ गु० दीन होय जोगणीयां चोसठ गु-
रुकी दास भइरे हेजी सात दिया बरदान
हरषसें पसर्या सुयश मही प० गु० ४ पुष्प-
माल गुरुगुणकी गूंथी चाढो चित्त चही रे
सु० चा० हेजी कहे रामऋद्धिसार सुयशकी
बूटी आप दई बू० गु० ५ श्लोक-कमलच-
म्पककेतकीपुष्पकैः परिमलाहृत षट्पदवृन्दकैः
। सकल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त० पुष्पं
निर्व्विपामि ते स्वाहाः ॥ ३ ॥

अथ चोथी धूपपूजा.

दोहा–धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परिमल पूर। जस सुगंध जगमें बधे, चढे सवाया नूर।

राग सोरठ–कुवजाने जादू डारा ए चाल।

अंबिका विरुद बखाने गुरु गुरु तेरो अं०। तुमयुगप्रधान नहीं छाने गु०। ए आंकणी। गढ गिरनारपै अंबड श्रावक ऐसो नियम चित्त ठाने। युगप्रधान इस युगमें कोई देखूं जन्म प्रमाणे। गु० अं० १। कर उपवास तीन दिन बीते प्रगटी अंबा ज्ञाने गु०। प्रगट होय करमें लिख दीना सुवरन अक्षर दाने। गु० अं० २ या गुणसंयुत अक्षर बांचे ताको युगवर जाते॥ गु०॥ अंबड मुल्क २ में फिरता सूरि सकल पतवाने॥ गु०

३ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु कर पसार दिखलाने ॥गु०॥ वासक्षेप उन ऊपर डाला चेला वांच सुनाने ॥ गु० ॥ अं० ४ ॥ सर्व-देव हैं दास जिनोंके मरुधर कल्प प्रमाणे ॥ युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वर अंबड शीश झु-काने ॥ गु०॥५॥ उद्योतन सूरीने निज हाथे चौरासी गच्छ ठाने ॥ सो सब तुम्हारी सेवा सारे चौरासी गच्छ माने गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे सो नहीं तत्त्व पि-छाने । भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युगप्रधान परिकीए गंडिका गणधर पदवृत्ति माने । कहे राम-ऋद्धिसार गुरुकुं पूजा धूप कराने ॥गु० ८॥

श्लोक-अगरचन्दनधूपदशांद्रजैः प्रसरिताखिल-दिशु सुधूमकैः । सकल मं०४ ओँ ह्रीँ श्रीँ

पर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ ४ ॥

अथ पांचमी दीपपूजा.

दोहा-दीप पूजकर सुगण नर, नितर मंगळ होत । उजियाला जगमें जुगत रहे अखंडित जोत ॥ १ ॥

चाल ख्यालकी ।

पूजन कीज्योजो नर नारी गुरु महाराज का हो पू० । सिंधुदेशमें पंच नदीपर साधे पांचो पीर । लोई ऊपर पुरुष तिराये ऐसे गुरु सधीर पू० १ । प्रगट होयके पांच पीरने सात दिया वरदान । सिंधु देशमें खरतर श्रावक होवेगा धनवान पू०२ सिधुदेश मुलतान नगरमें बडा महोच्छव देख । अंबड और गच्छका श्रावक गुरुसे कीना द्वेष पू० ३ । अणहिलपुर पत्त-

नमें आवो तो मैं जानुं सच्चा। बडे महोत्सव आवेंगे तूं निर्धन होगा कच्चा पू० ४ ॥ पत्तनबीच पधारे दादा सनमुख निर्वन आया। गुरु बतलाया क्योंरे अंबड अहंकार फल पाया पू० ५। मनमें कपट किया अंबडने खरतर महिमा धारी। जहर दिया उन अशन पानमें गुरु विधि जाणी सारी पू० ६। भणशाली मुखवर श्रावकसें निर्विष मुद्रो मंगाई। जहर उतारा तब लोकोंमें अंबड निंदा पाई पू० ७॥ मरके व्यंतर हुआ वो व्यंतर रजोहरण हर लीना। भणसाली व्यंतर वचनोंसे गोत्र उतारा कीना पू० ८॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेके गोत्र बचाया सारा। ऋद्धिसार महिमा सद्गुरुको दीपकका उजियारा पू० ॥९॥ श्लोक—अतिसुदीसिमयैः खलु दीपकै

विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः । सकल० ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० दीपं निर्व्विपामि ते स्वाहा ५॥

अथ छठी अक्षतपूजा.

दोहा—अक्षतपूजा गुरुतणी. करो महाशय रंग । क्षती न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥ १ ॥ राग आसावरी—अवधूत सो योगी गुरु मेरा ए चाल. रतन अमोलक पायो सु गुरु सम रतन अमोलक पायो। गुरु संकट सबही मिटायो सु० ए आंकणी। विक्रमपुर नगरी लोकनकूं हैजा रोग सं· तायो। बहुत उपाय किया शांतिकका जरा फरक नहीं आयो ॥ सु० र० १ ॥ योगी जंगम ब्रह्म संन्यासी देवो देव मनायो। फ· रक नहीं किनहोने कीनो हाहाकार मचायो ॥ सु० र० २ ॥ रतन चिंतामणि सरिखो

साहिब विक्रम पुरमें आयो । जैनसंघको कष्ट दुर कर जय जयकार वरतायो ॥ सु० र० ३ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण सबही शीश नमायो । जीवतदान करो महाराजा गुरु तब यों फुरमायो ॥ सु० र० ४ ॥ जो तुम समकित व्रतको धारो अबही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग मिटायो आनंद हर्ष बधायो ॥ सु० र० ५ ॥ जो कोई श्रावक व्रत नहीं धार्यो पुत्री पुत्र चढायो ॥ साधु पांचसे दीक्षित कीना साधवियां समुदायो ॥ सु० र० ६ ॥ मंत्र कला गुरु अतिशय धारी ऐसो धर्म दीपायो । ऋद्धिसार पर किरपा कीनी साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ॥ ७ ॥

श्लोक—सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलै प्रवरमौक्ति-

कपुंजवदुज्वलैः । सकल० ॐ ह्रीँ श्रीँ प०
अक्षतान निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥३॥

अथ सातमी नैवेद्य पूजा.

दोहा—नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक
चित चाव । गुरुगुण अगणित कुण गिणे,
गुरु भवतारण नाव ॥ १ ॥

राग कल्याण—तेरी पूजा बनी है रसमें ए
चाल. हो गुरु किया असुरकुं वशमें ए आं-
कणी. बडनगरीमें आप पधारे सांमेला घस
मसमें ब्राह्मण लोक बडे अभिमानी मिलकर
आया सुसमें ॥ गु०॥१॥ हे गु०महिमा देख
शक्या नहीं गुरुकी मरे मिथ्यात्वी गुसमें ।
मृतक गऊ जिनमंदिर आगे रखदी सनमुख
चसमें ॥ हो गु० ॥ २ ॥ श्रावक देख

भये आकुलता कहे गुरुसे कसमें । चिंता दूर करी है संघकी गउउठ चाली डममेंहो ।।गुरु० ।।३।। मरी गऊको जीती कीनो लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पडी रुद्रालय संघ या सब खुसमें ।। हो गु०४ ।। ब्राह्मण लोग पडे सब गुरुके देख तमासा इसमें ।। हुकम उठावेंगे शिर ऊपर तुम संततिकी दिशमें । हो गु० ६।। नमस्कार है चमत्कारको कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋद्धिसार गुरुकी आनंद मंगल जसमें ।। हो गु० ।। ६ ।।

श्लोक—बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः प्रचुरसर्पिषि पक्कसुखज्जकैः । सकल० ।। ॐ ह्रीं श्रीं प० नैवेद्यं निर्व्विपामिते स्वाहा ।। ७ ।।

अथ आठमी फल पूजा.

दोहा—फलपूजासे फल मिले, प्रगटे नवे

निधान । चहुदिश कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

रथ चढ यदुनंदन आवत हैं ए चाल ।

चालो संघ सब पूजनको गुरु समरथ्यां सनमुख आवत है रे ॥ चा० गु० ए आंकणो । आनंदपुर पट्टनको राजा गुर शोभा सुन पावत है रे ॥ चा० १ ॥ भेजा निज परधान बुलाने नृप अरदास सुनावत है रे ॥ चा० लाभ जान गुरू नगर पधारे ॥ भूपति आय बधावत है रे ॥ चा० २ ॥ राजकुमरको कुष्ट मिटायो अचरज तुरत दिखावत है रे ॥ चा० ॥ दश हज्जार कुटुम्ब संग नृपका श्रावकधर्म धरावत है रे ॥ चा० ३ ॥ दयामूल आज्ञा जिनवरकी बारा व्रत उचरावत है रे ॥ चा० ॥ ऐसे

चार राज समकित धर खरतर संघ बनावत है रे ॥ चा० ४ ॥ कुष्ठ जलंधर क्षय भगंदर कइयक लोक जिवावत है रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर ओसवंश पसरावत है रे ॥ चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक महिमा अधिक रचावत है रे ॥ चा० ॥ कहत रामऋद्धिसार गुरुको फल-पूजा फल पावत है रे ॥ चा० ६ ॥

श्लोक—पनसमोचसदाफलकर्कटैः सुसुखदैः क्लि श्रीफलचिर्भटैः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० फलं निर्व्विपामि ते स्वाहाः ८ ।

अथ नवमी वस्त्र अत्तर पूजा.

दोहा—वस्त्र अतरगुरु पूजना, चौवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

मनडोकिमहीन वाजे हो कुंथुजिन. ए चाल । लखमी लीला पावे रे सुंदर लखमी लीला पावे । जो गुरु वस्त्र चढावें रे ॥सुं०॥ सुजस अतर महकावे रे ॥ सुं० ॥ दुरजन शोश नमावेरे सुं० ए आंकणो । दरिया बीच जहाज श्रावककी डूबन खतरे आवे । साचे मन समरे सद्गुरुकुं दुखकी टेर सुनावेरे सुं० ॥ १ ॥ वाचंताव्याख्यानसूरीश्वर पंखी रूपेथावे । जाय समुद्रमें ज्याज तिराई फिर पीछा जब आवेरे सुं० २ ॥ पूछे संघ अचरजमें भरिया गुरु सब बात सुनावेरे सुं० ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु परचा प्रगट दिखावेरे सुं० ३ ॥ बोथर गूजरमल श्रावककी दादा कुशल तिरावे सुं० सूखसूरि गुरु समयसुंदरकी ज्याज अलोप दिखावे रे सुं०

४ ॥ बारासै इग्यारे दत्तसूरि अजमेर अ-
णसण ठावे । उपज्या:सोधर्मा देवलोके सो-
मंधर फुरमावेरे सुं० ५ ॥ इक अवतारी
कारज सारो मुक्ति नगरमें जावेरे सुं० ॥
कुशल सूरि देराउर नगरे भुवनपती सुरथा-
वेरे सु० ६ ॥ फागण वदि अम्मावस सोभा
पूनम दरश दिखावे रे सुं० ॥ मणिधारी
दिल्लीमें पूज्यां संकट सु ाने नावेरे सुं० ७ ॥
रथो उठो नहीं देख बादसा वांहो चरण
पधरावे रे सुं० । वस्त्र अनर पूजा सदूगुरुको
ऋद्धिसार मन भावे रे सुं० ८ ॥

श्लोक—अखिलहोरशुभैर्नवचोरकैः प्रवरमाव
रणैः खलु गन्धतः । सकल० ॥ ॐ ह्रीँ श्री
पं० वस्त्रं चोवाचन्दपुष्पसारं निर्व्विपामिते
स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी ध्वज पूजा ॥

दोहा–ध्वजपूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार। तीन लोकके शिखरपर, पहुंचे सो नर नार ॥ १ ॥

चाल–जिनगुण गावत सुरसुंदरीरे ए चाल। ध्वजपूजन कर हरख भरीरे। ध०। सज सोले शिणगार सहेल्यां श्रीसद्गुरुके द्वार खरी रे ध०। अपछर रूप सुतन सुकलीनी टम २ पग झणकार करीरे। ध०१। गावत मंगल देत प्रदक्षिणा धन २ आनंद आज घरीरे। ध०। निर्धनका लखमी बकसावत पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ध० २। जो जो परतिष परचा देख्या सुनो भविक दिलबीच धरी रे ॥ ध०। फतेमल्ल भडगतिया श्रावक पहली शंका जोर करीरे ध० ३। परातख देखूं तब मैं जाणुं प्रगट्या

ततखिण तरण तरीरे ध० । पुष्पमाल शिर केशर टीको अधर श्वेत पोशाक करीरे ध० ४ । मांग २ वर बोले वाणी फरक बतावो गुरु मेघझरीरे ध० फरक उगायो दोय लाख पर तरी महिमा नित्त हंरीरे ध० ५ । गैन-चंद गोलेछाको तें परतिख दीना दरस फ-रीरे ध० । विक्रमपुरमें थुंभ तुम्हारा चित्र करावत सुरसुंदरीरे ध० ६ । थानमल्ल लूण्यां-पर किरपा लखमी लीला सहज वरीरे । लखमीपति दुगडकी साहिब हुंडीकी भुग-तान करीरे ध० ७ । जो उपकार कर्‍या तै मेरा दीना सनमुख अमृत झरीरे ध० । तेरी कृपासे सिद्धी पाई जागे जस अरु भाग भ-रीरे ध० ८ । भूखा भोजन तिसिया पानी भरत हाजरी देव परीरे ध० । बिखम बख्त

पर सहाय हमारे ऋद्धिसारकी गरज सरीरे ध० ९ ॥

श्लोक—मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणी ; नादकै ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः । सकल० शिखरोपरि ध्वजाम् आरोपयामि स्वाहा ॥

दोहा—भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृंद । कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्रीजिनचंद ॥ राग आसावरी—अथवा धनाश्री । पूजन जगजगसुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० । तेरे चरणकमल बलिहारी सु० । साह सलेभी दिल्लीको बादस्या सुनके शोभ तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके भट्टारकपद धारी सु॰ १ । अम्मावसकी पूनम कीनी चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चरचा सूरजसे तपधारी सु० २ चौदासे

उगणीस शाळमें लखनउ नगर मझारी।
गोरा फिरंगी टोपीवाला दिलमें यह बात
बिचारी सु० ३ जैन सितांबर देव जो सच्चा
पूरे मनसा हमारी। वाणी निकसी राज्य
तुम्हारा होवेगा अधिकारी सु० ४। अंधे-
की खोली आंरत मूरतमें पूजे सब नरनारी।
कहां लगे गुण बरणूं मै तेरा तूं ईश्वर जय-
कारी स० ५। उगणीसे संवत्सर तेपन
मगसर मासमझारी। शुकल दूज जिनचंद
सूरीश्वर खरतरगच्छ आचारी सु० ६। कु-
शलसूरिके निजसंतानी क्षेमकीर्ति मनुहारी।
प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचमे जानसहित
अणगारी सु० ७॥ क्षेमधाड शाखा जब प्र-
गटी जगमें आनंदकारी। धर्मशील साधू
गुणपूरे कुशलनिधान उदार। सु० ८। या

पूजन करतां सुख आनंद अने अन धन ल-
खमी सारी। कहत रामऋद्धिसार गुरूकी
जय २ शब्द उचारी सु० ९॥ इति श्रीसम-
स्तदादागुरूपूजा संपर्ण॥

॥ अथ आरती लिख्यते ॥

जय जय गुरू देवा आरति मंगल मेवा
आनंद सुख लेवा । ज० । आंकणी । इक
व्रत दुय व्रत तीन चार व्रत पंच व्रतमें सोहे
गु० । जगत जीव निसतारण सुर नर मन
मोहे ज० १ । दुःख द्रोह सब हर कर सद्-
गुरू राजन मतिबोधे । सुत लखमी वर दे-
कर श्रावककुल सोधे ज० २ । विद्या पुस्तक
धर कर सद्गुरू मुगलपूत तारे । वस कर
जोगन चौसठ पांच पीर सारे ज० ३ । बीज

पडंती वारी सदूगुरू समंदर जहाज तारी। वीर किये बस वावन भगटे अवतारी ज० ४ ।:जिनदत्त जिनचंद कुशल सूरि गुरू खरतरगच्छ राजा। चोरासी गच्छ पूजे मन वांछित ताजा ज०५ ॥ मन शुद्ध आरती कष्टनिवारण सदूगुरूकी कीजे। जो मांगे सो पावे जगमें जस लीजे ज० ६। विक्रमपुरमें भगत तुम्हारो मंत्र कलाधारी। नित उठ ध्यान लगावत मनवांछित फळ पावत राम ऋद्धिसारी ज० ७ ॥ इति पद ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल मुखरस अनिल। मितरस गुणधारी प्रबल सबल धन मोहकी। जिणते चमुहारी ॥१॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत। नयतन विस्तारो। भव कूपे मापें पडत।

जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके आचारिज पदसार । तिनकुं वंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद नमस्कारः ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

जंकिंचि नाम तित्थं । सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरी-आणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्त-माणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं

लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं च-
क्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिद-
याणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं ।
धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरं-
तचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दं
सण धराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं
जावयाणं तिन्नाणं तारियाणं बुद्धाणं बोह-
याणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं
सव्वदरिसिणं सिव मयल मरुअ मणंत म-
क्खय मव्वाबाह सपुणराविति सिद्धिगइ
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअ
भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ
भविस्संति ॥ णागए काले ॥ संपइ अ व-
ट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे इहसंतो तत्थ संताई ॥ १ ॥ इति

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

भगवन् जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ इति ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः॥

॥ अथ गुरुदेवजोका स्तवन ॥ राग प्रभाती ॥

श्री जिनदत्त सूरिंदा परम गुरु ॥ श्री जि० ॥ परम दयाल दयाकर दीजे । दरिसन परम आनंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक सेवक जन सुखकंदा ॥

सद्गुरू ध्यान नाम नित समरण दूर हरण दुःख दंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ १ ॥ निजपद सेवक सांनिधकारी, राखीये गुरू रोजिंदा ॥ करजोडी विनय युत विनवे श्रीजिनहरख-सूरिंदा ॥ प० श्री० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

जयवीअराय जगगुरू । होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं भव निव्वेओ मग्गाणु-सारिआ इठ्ठ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोग वि-रुद्ध च्चाओ ॥ गुरूजणपूआ परत्थकरण च ॥ सुह गुरू जोगो तव्वयण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥

श्री आचार्यपद आराधनार्थं करेमि काउसग्गं

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारव-

त्तिआए सम्माणवत्तिआए ॥ बोहिलाभव-
त्तिआए । निरूवसग्गवत्तिआए । ९ । व
द्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए
॥ वड्ढमाणोए ठामि काउसग्गं ॥२॥ इति ॥

॥ अथ अन्नत्थउससिएणं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासि-
एणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस
ग्गेणं भमलिए पित्त मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहु-
मेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचा-
लेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥ २ ॥
एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविरा-
हिओ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं

झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ एकनवकारनो काउसग्ग करवो पारी एक थुई वोलवी ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुतिः ॥

पंचाचारकुं पाले उजवाले दोषरहित गुणधारीजी ॥ गुणछत्तीसें आगमधारी द्वादश अंग विचारीजी ॥ प्रबल सबल घनमोह हरणकुं अनिल समोगुणवाणीजी । क्षमा सहित जे संयम पाले आचारज गुण ध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुतिः ॥

॥ श्री दादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥

विलशेऋद्धि समृद्धि मिलि । शुभयोगे पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरू अतुल बली । मनवंछितआपै दादो रंगरली ॥ १ ॥ मंगललील सबें विपुला । नवनत्रय

महोछव राजयला । सुपसायें गुरु चढती कला । सुकुलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दीन थाये सबला । सद्‌वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ बीझैं चमर निसाण घुरै । नरवै दरबार खडा पुहरै । जय जय करजोडी उचरे । सांनिद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । दुख रोग दुकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद घुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमें । प्रगटयो पुण्य प्रताप हमै । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीरतनें । पहिरे वेलाउल होयरनें । ध्यावो कुसल-

गुरु एक मनैं । जृंभक सुरमंदिर भरै धनैं ॥ ७ ॥ ततखिण धण खंच्यो आवे । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥८॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिडरै । बूडंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चेसुं उत्ररै ॥ ९ ॥ खड खड खडग प्रहार वहै । सोदामनि जिम समसेल सहै । कुशल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥१०॥ थुंम सकल परचापूरै । श्री नागपूरै संकटचूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भयटालै दूरै ॥११॥ वीरमपुर वानै सुधरै । खंभाइतपुर विक्रम नयरै जिणचंद सूरि पाटे पवरै । जसु कीरति महि मंडळ प्रसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम

दक्षिण आगे । उत्तर गुरु दीपै सोभागै ॥
दह दिशि जनसेवा मांगे । श्री खरतर ग-
च्छनी महिमा जागै ॥१३॥ पुरपट्टण जन-
पद ठामै । गाईजे कुशल नयर गामै पूजै
जे नरहित कामैं । ते चक्रवर्ति पदवी पामै
॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि साखै । सेवक-
जनने सुखिया राखै । समर्या गुरु दरसण
दाखै । श्रीसाधु कीरत पाठक भाखै ॥ विल०
॥ १५ ॥ इति० ॥

॥ श्री जिनदत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि.॥

सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री
जिनदत्तसूरि । बंदिसु खरतरगच्छरयण ।
सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै
वरसै । बत्तीसै जसु जम्म । वांछिगमंत्रि

पिता जणणी । वाहडिदेव सुरम्म ॥ २ ॥
इक्क तालै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरे जसु-
पाट वइसाखांवदि छठिदिन । पइ भणमें सु-
रथाट ॥ ३ ॥ अंबड सावय कर लिहिय ।
सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जग पयडि-
योए । सिरि सोहै पडिबिंब ॥ ४ ॥ जिण
चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बा-
वन्ना साइण डाइण विज्जुलिय । पुहविह
नाम नयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलक्कर सहिय
। साहियजिम धरणिंद । सावइ साविय ल-
क्ख इग । पडिबोहिय जिणबिंब ॥ ६ ॥
अरि करि केसरि दुठदल ।चउविह देवनी-
काय । आंण न लोपै कोई जुगे । जसु प्रण-
में नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें ।

अजयमेरपुर ठाण । इग्यारस आषाढसुदि सगपत्तन सुहझांण ॥ ८ ॥ श्रीं जिन वल्लह सुरिपए । श्रीजिणदत्तमुणिंद । विघ्नहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥

इति श्री जिनदत्तसूरिजिअष्टकं

॥श्रीजिनकुशल सुरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि०॥

रिसहजिणेसर सोभ्यो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पयकमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंदकुलं वर पूनिमचंद । वंदो श्रीजिनकुशलमुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास । जो समरे । तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मूरु मंडल समियाणो गाम । धण कण कंचण अति अभिराम ।

जिहां वसै जिल्हागरमंति । जैतसिरी तसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसै तीसै जम्म सैंतालै सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरै जसुपाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरग पायाल । अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रभुप्रताप नविमांनै सोय । मैं नबि नयणे दीठ जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन सुवन्न । पुत्रहीण पामे बहुपुत्र । असुखी पामे सुखसंतान । एकमना करतां गुरुध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु समरण आपद सहु टलै । सयल सांति सुखसंपत्ति मिलै । आधि व्याधि चिंता संताप । ते छंडी नवि मंडै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां । प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां ।

सेवंता सुरतरुनी छांहि । निश्चे दालिद्र मेटै बांहि ॥८॥ त्रिसहर विस नर विस नरनाह । भूत प्रेत ग्रह व्यतंर राह । प्रभु नांमें जे न करै पीड भाजे भावठ भय भीड ॥९ ॥ रोगसोग सवि नासे दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटो पंडित थाय । प्रभु पसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछे भव-सायर पोत । सो सद्गुरु मैं भेटयौ आज । रलिय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥

आज घरअंगण सुरतरु फलियो । चिंता-मणि करकमलै मिलियो । उदयो परमाणंद धरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्न गिणियो । जुगपवरागम जोमें थुणियो । चंद्रगच्छ म-हिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी-

पति सेवा। कांई मनावो देवी देवा। चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार एकवत भणींजै। श्रीजिनकुशल सूरि समरिजै। सरै काज आयासविणे ॥ १५ ॥ संवत् चउदइक्यासी वरसै। मुलक वाहण पुरमें मनहरसै। अजियजिणेसर वर भवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण। विघन हरण सहु पाप निवारण। कोई मत संसोधरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ सेवै सुरनर राया। श्रीजिनकुशल मुनिसर पाया। जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरुगुण अभिनंदैं। ऋद्धि समृद्धे सौ चिरनंदै। मनवंछित फलमुझ हुवो ए ॥१९॥

दादाजी श्रीजिनकुशसुरिजि उत्पत्ति विचारगर्भित स्तोत्र संपूर्ण.

॥ अथ श्री दादाजी स्तवन ॥

सद्गुरु करुणानिधान राखो लाज मेरी ॥टेक॥ जै जै जिनकुशलसूरि । समरत हाजर हजूर । महकत जिम जसकपूर । महमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुम हो दयाल । छिनमें करदो निहाल । संकटको चूरदेव । दोलतकी ढेरी ॥ स० ॥२॥ तुम हो सुरतरु समान वंछितफल देवो दान । सेवगकों दीनजान । भेटो भवफेरी ॥ स० ॥३ ॥ सरण आयेको राखो लाज । वंछित सब पुरो काज । हरखचंद सरण आये । कीरति सुणतेरी ॥ स० ॥४॥ इति पदम् ॥

॥अथ श्री जिन कुशलसूरिजीको छंद लि. ॥

समरुं माता सरस्वती । कुमारि कर-

जोडा कवि माता कवियण तणा। पुरै वं-
छित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुश-
लगुरु, दायक वंछित देव! अहनिसि तो ओ-
लग करै। सुन नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर-
पट्टण गामें प्रगट। जग सगलै जस वास।
पुरावदी तो पालियै। वसैसु दादो वास
॥ ३ ॥ (छंद मोतीदाम) दादो वास दियै
दौलत्त। वधै छत्र छाया सेवक वित्त।
वधारै मांम दिसो दिसवान ॥ धरै इक
चित्त जिके गुरु ध्यान ॥ ४ ॥ पूनम पूनम
पूजै पाय। नवा नवा नैवज वार निपाय।
चंपावलि केतकि फूल चरच। अनोपम श्री-
फल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर ल-
च्छि अछेह। संझती सोल वधंती नेह।
लहै घरनारी कोयण वांण। लहै घरपूत

सपूतसुजांण ॥ ६ ॥ लहै भलगांम सुठांम
भूवाल । लहै ढिगमित भला ढींचाल ॥
लहै घर मंदिर घोडा जोडि । लहै भट से
करै करजोडी ॥ ७ ॥ लहै घर मंगल मद
मसत्त । चीर अनोपम मयगल सत्त ।
लहै घर साजण हल किलोल । ल
नीतलीला छाकाछोल ॥ ८ ॥ लहै घरकु-
रला कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर ।
लहै मनवंछित भोग विशाल । लहै घर
साल कचोला थाल ॥ ९ ॥ घुरै नि । गोत
तणा गहगट्ट । भणे नित जय २ चारण
भट्ट । फलै पुत सपूतां बांझि फलंति । विछा-
हा वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेका-
नेक विरुद अपार । दीठो इक काल्हा तूं
दातार । जोहां सहस्स हुवे जो मुक्ख ।

कहुं इक जोडां केइ रुक्ख ॥ ११ ॥ वडा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात । गुणेंकर गिरुवो समुद्र सरीस । कल्योमें कोई न करज्यो रीस ॥ १२ ॥

(दुहा)

रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिलार । कहियो जगमें कुसलगुरु । खर-तरगछसिणगार ॥ १३ ॥ (छंद नाराच) सिणगार हार सोहए । सुकामधेनु दोहए । धरंत ध्यान जो सदा । टलंतदूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथमतो देराउरै । सुथान सिंधु-थीवरै । जेशाण थुंभ जागतो । सुदिठ संघ सावतो ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हरैं फतैपुरै । गुरु सदा उदोकरै ॥ १६ ॥ मरोट थांन

मुलगो । एकांत चित्त ओलगो । बीकांण
वान वाधतो । सुथांन थांन साबतो ॥१७॥
प्रभावना रिणीपुरे । नीसाण वाजता धुरे ।
नागोर नांम दीपतो । दाणव्व देव जीपतो
॥ १८ ॥ तोरण तेम सोहए । जगत्त मन्न-
मोहए । सरूप मेडते सही । अपार लच्छी-
जां लही ॥ १९ ॥ महिम्म माल पूरतो ।
लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरे ।
ठत्तोस पवनखूलरे ॥ २० ॥ दाद्दारी करंत
सेव । हिंदुआं तुरक्कां देव । सदाशुद्ध सांगा-
नेर । जालमी करतं जेर ॥ २१ ॥ अमर-
सरे अनेक । राखतो जुठोडे टेक । मालपुरे
महिमान । खान खान सेवे थांन ॥ २२ ॥
ब्राह्मणपुरे राज रीत । जे तारणे जगत्र जीत ।

सोभित सुख सदयं । वेनातटे विलदयं ॥ २३ ॥ खेजडलै खरो सदा वाहड मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा जुडंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत संघरी । खंभायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आग पाटणें। सूरत सुक्ख सांघणे। अनंत तेज अहम्मदा। सुभंगलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचार भुज्ज सासतो । तुरत शत्रु त्रासतो । उदपुरै जुईडरे । सेत्रावे कोटडे गुरै ॥२७॥ गुरू सदा उदो करै । एकांत ध्यान जो धरै । भमंत भाण जेतली । कीरत्त कोड तेतली ॥२८॥ (दुहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समर्या होय हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारे

सूर ॥ २९ ॥ (कलश) सूर तेज जिम नूर दूर आपद भय टाले। माईतां ज्यु मयाकरी। सेवक निज प्रतिपाले । मनवं-छित मायबाप । कुशलगुरु कामितदाता। पूनिम पूजै पाय। रहे जे ध्यानें राता सुप-साद सोमसुंदर सुगुरु अभय सोम ओलग करी प्रगटियो थुंभ पालीपुरे। विजेसिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दादाजी वृद्ध स्तवन ॥

सदगुरुजी थे सांभलो। श्रीजिनदत्तसूरी सही। सेवकने सांनिध करो। पूरो मन-हजगोसहो ॥१ ॥ (दोलतिदोहो दादाजी संपतिं दो) दौलतदो गुरु माहरा। थांहरा विरुद्ध अनेक हो।-तो सेव्यां संकट टले।

एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥ २ ॥ दो० ॥ जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया बावन वीर हो । सिंधमां है तें साधीया । पंचनदी पंच पीर हो ॥ ३ ॥ दो० ॥ पडिकमणां मांहे बीजली । वलिय वली झबकायहो । थे मंत्री राखीतिका । तूठो वरदे जायहो ॥ ४ ॥ दो०॥ उच्छव करतां उच्चपें । मूओ मुगलरो पूत हो । जाप करी जीवाडीयो । संघ मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥५॥ दो०॥ वडनगररे ब्राह्मणें देहर धरो मृत्यु गायहो । पंचपरमेष्ठि विद्याबलै । पिसुण लगाया दादै पायहो ॥ ६ ॥ दो० ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी । ते दूरकीया सहु दुःख हो । परवार पिण पोते कीयो । सहुने दीधो दादै सुख-

हो ॥ ७ ॥ दो० ॥ अंबड हाथे अरुयरे । थे प्रगटया ततखेवहो । युग प्रधान जग तुं जयो । आखै अंबिका दैव हो ॥८॥ दो० ॥ थांभो वज्र विदारनें । पोथी परगट कीध हो । विद्या सोवन अक्षरें । उज्जेणीमांहे लो-यहो ॥ ९ ॥ दो०॥ इम विरुद घणा छै ता-हरा । कहितां नावै पार हो । भाग संजोगै दादौ भेटीयो । अडवडीयां आधारहो ॥१०॥ दो० ॥ हुं छुं सेवक ताहरो । थे आपो ध-नरिद्धहो । भुवन करति सुपसावले । लाभ उदै सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दो० ॥ इति ॥ इति श्री दादाजी गीतं ॥

॥ (पुनः) राग जैतसरी ॥

सहाई मेरे श्रीजिनकुशलगुरू ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगटयो । खरतर गच्छ-

वरु ॥ (स०) बावनोचंदन मृगमद मेली।
पूजो प्रेम भरू ॥ (स०) ॥ १ ॥ चिंता चू-
रण विघ्न विडारण दालिद्र दूर हरू ॥ (स०)
॥२॥ दिन दिन दिन साहिब चढ़िते वानें।
ध्यावो ग्यान धरू (स०) वाजे जेहना ज-
शना वाजा ठावी ठांमै जरु ॥ (स०)
॥ ३ ॥ संवत् अढारसमें अडसठै मिगसर
मास थिरु । (स०) संघसहित श्रीसद्गुरु
भेटे । श्रीजिनहर्खसरु ॥ (स०) ॥४॥ गांव
गडाले चरण नमंता । तूठो कल्पतरु ॥ (स०)
पाठक श्रीविद्या हेमगणीने । उदयरतन करु
॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥ (पुनः) देशीकी चालमें ॥

दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई

दरशण सदा देवो । दादो दीनदयाल सदा दाता समर्या आपै सुखसाता । दादो जग-नायक जगगुरु भ्राता ॥ (दा०) ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरै । दादो सेवकना संकट चूरै । दादौ दुरित हरै सहुनी दूरै ॥ दा० २ ॥ दादा अलगांथी जात्री आवै । दादो देखीने ते सुख पावै । ह्मारां दादा-जीने जोडे कोई नावे ॥ दा० ॥३ ॥ दादौ राजनगर मांहे राजै । जिहां सुजश नगारा नित बाजे । दादौ छोगालां सेहर छाजै ॥ दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केशर मूकड घोली । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीने मिल २ टोली ॥दा० ५॥ दादौ आरतिया आरति टालै । दादो सेवकज-

ननें प्रतिपालै । दादौ जिनशासन नित उ-
जवालै ॥ (दा०) ॥ ६ ॥ दादो महि-
मावंत महाराजा । दादो राजै खरतरगच्छ-
राजा दादो समरयां सफल करे काजा ॥
(दा०) ॥ ७ ॥ दादो कुसलसुरिंदबहुगु-
णधारी । दादो परतिख सुरतरु अवतारी ।
जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी ॥ (दा०)
॥ ८ ॥ दादौ श्री जिनचंद सूरिंद पाटे
दादौ गाजै गुणियण गहगाटे । जसु-
थान सोहै जगथिर थाटै ॥ (दा०) ॥ ९ ॥
दादो महिर निजर मुझ परिकरिये । दादा
आरति पीडा दुख हरियै । दादा जिम जग
जय कमलावरिये ॥ (दा०) ॥१०॥ दादा
सेवगनें सांनिध करज्यो । दादा दुसमननें

दूर हरज्यो । जिणचंदना मनवंछित फळ-ज्यो ॥ दा० ॥११॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

॥ पुनः ॥

(आषाढे भेरुं आवै इस चालमें) गाजे जिनकुशल गडालै । सेवकना संकट टालै हो ॥ गा० ॥१॥ परतिख गुरु परचा पूरै । सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ छ-तरी नितरी छवोछाजै । विचमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ झुळरे यात्री मिल आवै । दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली । मांहे वळी मृगमद घोळीहो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पगं नीरपखाळी । गावो गुण गीतरसाळी-हो ॥ गा० ॥ ६ दादोजी

दुखियां सुख देवै । निरधनीआं नीत धन देवैहो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला । गुरु नामें पामें कमलाहो ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी पामें परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावे । गुरु पूज्यां वंछित पावे हो गुरु तिसियां पाणी । तिणवेला जलधर आणी हो ॥ गा० ११ ॥ ग्रह गोचर जोर जंजालै । पीडा हुवे आलै मालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ वागे जगजशना वाजा । राजे खरतरगच्छ राजाहो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वरमाता । जिल्हागर मंत्रि वि-रूयाता हो ॥ गा० १४ ॥ संवत सतरैसै

एक्यासी । काती पूनिम परकासोहो ॥ गा० ॥ १५ ॥ सहु संघसहित सुविलासे । अधिके हर हेत उल्हासे हो ॥ गा० ॥१६॥ इम यात्र करी आणंदे । जिनभक्ति जती सर वंदैहो ॥ गा० ॥१७॥ इतिपदम् ॥

॥ पुनः ॥ (राग धन्यासरी) ॥

आयो आयोजी समरंतां दादोजी आयो। संकट देख सेवककुं सद्गुरु । देरावरत ध्यायोजी समरंतां ॥ दा० ॥ १ ॥ दादा वरसै महनें रात अंधेरी । यायपिण सबलौ वायौ । पंच नदी हम वैठे वेडो । दरीयै हो दादा दरीयै चित्त डरायोजी ॥ स० ॥दा०॥ ॥२॥ दादा उच्च भणी पोहचावण आयो । खरतर संघ सवायो । समयसुंदर कहे कुशल २

गुरु । परमानंद सुख पायोजी । समरंतां दा-
दोजी आयो ॥ ३ ॥

॥ इतिपदम् ॥

राग—लहुरी ॥

भाया भक्तिसुं पूर रहोरे । दुरजन सब
दूरहरोरे (भा०) मेरे मनमें भक्ति वैरागी ।
चित्त परणित लगनसुं लागी । मोरी भाग्य
दशा अब जागी (जीयाहो) ॥ भा० ॥ १ ॥
सब सज्जन मिलकर आवो । गुरु चरणे
चोक पुरावो । वलि अक्षत धवल वधावो
(जीयाहो) भा० २ ॥ गुरु महिमावंत स-
वाई । गुरुनाम सदा सुखदाई । गुरु सेव्यां
पाप पुलाई (जीया हो) भा० ।.३॥ घस
केशर भरकैं कचोलो । मांहे मृगमद कुंकुम

घोली । गुरु पूंज रचो भरझोली (जीया हो) भा० ॥४॥ श्रीजिनहर्षसुरीसरराजा । वाजै जग जशना वाजा। सत्यरत्न करे सुभकाजा (जीया हो) भा० ॥५॥ इति स्ववनम् ॥

राग—केरवो.

कुशलसूरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजा। भाव धरि करो पूजा चित्तसुं कुश० ॥ १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती मनसुध माल करै भ-विरुचिसुं (कुश०) ॥ २ ॥ अशरण शरण परमगुरु सेवो। धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं (कुश०) ॥ ३ ॥ सेवकजनप्रति-पाल जगत् गुरु आशापुरै गुरु घणु दत्तसुं ॥ (कुश०) ॥४॥ ध्यानसुधारै ग्यान वधारै।

रुप रंग देवै चितहि मतसुं ॥ (कुश० ॥५॥
कुशलसूरिंदगुरु सानिध्यकारी । परतिख प-
रचापूर सतसुं ॥ (कुश०) ॥ ६ ॥ श्रीजि-
नहर्ख सदा सुविलासी । सत्यरतन सुख
एही छतसुं ॥ (कुश०) ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ राग देवश्री चलत ॥

आज करोरे उच्छाह । श्रीजिनकुशल-
सूरिंद आगै (आ०) आ आछी वेला नें ओ
आछो दाव । इण आछी वेला । क्यूं करो
लाज ॥ (आ०) ॥ १ ॥ विविधप्रकार
पूजो मनरंग । हिलमिल गावो साजन संग
(आ०) धूप दीप करोनैवेद्यसार । फुल
वारीनो नहि जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥
अक्षत श्रीफल ढोवे जेह । पुत्र कलत्र पांमैं

संपदा तेह ॥ (आ०) ॥३॥ सुरनर नारी उभा करजोड । कोण करै ह्मांरा दादाजीनी होड ॥ (आ०) ॥४॥ श्रीखरतरगच्छपति सिरदार । राजा राणा सेवै इक्तार (आ०) ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंदगुरु गरीबनिवाज (आ०) ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ख करै उच्छरंग । सत्यरतनमन ग्यान उमंग (आ०) ॥ ७ ॥ इति स्तवनम् ॥

(राग बंगालो घाटो)

मैं निरख्या गुरु महाराज । छतीयां हर्खभरी (मैं०) अमल अनंत गुण आगरूरे समतारसनो धाम । परम परम परमातमारे । वंछित दायक स्वाम (छ.मे)॥१॥ करुणानिध गुरु दोलतीरे । सेवकजनप्रतिपाल ।

भविजन भक्तै भावसुंरे । ल्यावे भर भर थाल (छ. मे.) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमारे । भरिय कचोली हाथ । पद्मण आवे मलपतीरे पूजै सहीयर साथ (छ. मे) ॥३॥ कुशलसूरसिर साहिबारे । श्री जिनचंद्रसूरि पाठ । बलिहारी जिनकुशलनोरे । गाजे घणुं गहिगाट (छ. मे. ॥ ४ ॥ अष्ट सिद्धि सानिध करैरे । सुख संपूरण सार । श्रीजिनहर्षसूरीसरूरे । सत्यरतन सुखकार (छ. मे.) ॥ ५ ॥ इतिस्तवनम् ॥

॥ राग प्रभाति ॥

चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं में गुरुराय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्तसूरीसरसद्गुरू । सफळ घडी सेवा चर-

णकी (वा०) ॥१॥ प्रथममंगल गुरु रायकी सेवा । अशुभकरम सब हरणकी (वा०) ॥ २ ॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणको (वा०) ॥३॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । शरन ग्रही इन चरणको (वा०) ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ख तुम चरणांको दासा । आशा पूरो सुख करण की ॥ (वा०) ॥ ५ ॥

॥ इति. दादाजी स्तवनम् ॥

॥ पुनः ॥

कुशलगुरु अब मोही दरशण दीजै । (अ०) ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु । ज्युं मन मूढमती जं (कु०) ॥१॥ जल दातार बिरुद अमृतरस । श्रवण अंजलि भर पीजे ।

सुरतरूसम दरशण बिन देख्यां । कहो नयण किम रीझै । (कुं०) ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि । इतनो अरज सुणीजै । परमभगत जिनराज तुमारो अपनो कर जाणीजै (कु०) ॥ ६ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ पुनः ॥

कुशलगुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जनमन वंछित पूरण । समर्यां होग्र हजूर (कु०) ॥ १॥ परमदयाल प्रेमरस पूरण । अशुभ हरण भये दूर । संघ उदोकर सदगुरु मेरा । वीनवै श्रीजिनचंदसूरि (कु०) ॥ (२)

॥ देशीकी चालमें ॥

सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल-

सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ (स०) श्री-
फलभेट चढावस्यां । म्हे तो चरणांरी पूजा-
वास्यांहे माय ॥ (स०) ॥ १ ॥ मारुदेशमैं
शोभता । नगर बीकानेर राज हे माय ॥
गांम गडाल दीपता । ज्यांरी महीयल म-
हिमा छाज हे माय ॥ (स०) ॥२॥ समर्यां
संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे
माय । सुखदायक श्री संघने । खरतरगच्छ
अधिकारी हे माय ॥ (स०) ॥ ३ ॥ दूर-
देसांतरथी घणा । हिल मेल यात्री आवै
हे माय । लुळ लुळ सीस नमावतां संत सु-
जस मिल गावे हे माय ॥ (स०) ॥ ४ ॥
सझ सिणगार मनोहरू । ठम २ पाय ठम-
कावे हे माय । (स०) तन मन प्राण को-
भावती गोरी मंगळ गावे हे माय ॥ (स०)

॥ ५ ॥ बिछुड्यां साजन मेलवै । अनमी पाय नमावे हे माय । मनरा मनोरथ पूरव । परघरलखमी ल्यात्र हे माय (स०) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाटमें । समर्यां सांनिध आवै हे माय । भूख भोजन मेलवै तिसियां नीर मिलावै हे माय ॥ (स०) ॥७॥ यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगार हे माय ॥ (स०) ॥८॥ कुशल सूरिंद गुरु आगले । भविमिल भावना भावै हे माय । चंद फतै मुनि नित नमें । परमानंद सुख पावै हे माय ॥ (स०) ॥९॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

आयो सहु श्रीसंघ आसधरे । गुरु भौन

गयां कहो केम सरे । दरशण वहिलो सद्गुरु दाखो । निज सेवक जांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमो वेला आयबणी । कईवो करीयै तुझ अरज घणी । अलगा छो तो वेगा आवो । हिव ढील घडीभर न करावो ॥ २ ॥ तुं सद्गुरु खरतरगच्छ साचो । कोइ न जाणे तुमनें काचो । इण संकटमें आलस न करो । दादा दुशमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ कांई चूक पडी सद्गुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरी खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चे पोतानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सहु मिलकर अठां लगे । पाछा किम जावां इणें पगे । इणपरि गुरू सुणीयै अरज इसो । हिव सबकों मेलो करीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल

सूरिसर जगचाव्रो । अपणायतकर वेगा आव्रो । अगला विरुद्द ते अजुवालो। परघल निज छारू मतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम ग-हाले ए गायो सुणतां,सदगुरु वेगो आयो । राजीहुए सघला रंगरली । जिनचंद्रनी आशा सफल फली ॥ ७ ॥ इतिपदम् ॥

॥ ताल ठुमरी ॥

सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरुरायजी (सदा०) खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन २ वधै सवायजी (सदा०) ॥१॥ सकजा सुतओर सुंदर नारी । शुभ परिकर सुखदायजी [सदा०] मित्र समागम सुज-शवधारण । नितप्रति हरख उछाहजी [सदा०] ॥२॥ राजापरजा पाय नमें सहू । गुरुसम-

रण सुपसायजी (सदा०) दोखी दुशमण नृप भय पडिया । सद्गुरु करय सहायजो ॥ (सदा०) ॥ ३ ॥ विषभी विरियां संकट पडियां । समर्यां आवै धायजी (सदा०) भूखां भोजन तिसियां पाणी । निरधनियां धन दायजो ॥ (सदा०) ॥४॥ संघ सकलने द्यो सुखशाता । जिम किरत जग थायजी (स०) थानक थिरता पारघल भोजन । पग पग कुशल सहायजी (सदा०) ॥५॥ अभय महा सुखदाई सद्गुरु । नवनिधि वंछित थायजी (सदा०) सुमति सवाइं नितघर संपद । दानविशाल लहायजी (सदा०) ॥ ६ ॥ इति० ॥

॥ पुनः ॥

जिनकूशलसुरिंदगुरु सदानमो (जि०)

सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांइ भमो ॥ (जि०) ॥ १ ॥ वाट घाट अरु विषमी विरयां। विघन बुराई दूर गमो (जि०) ॥ २ ॥ अहनिशि नांम मंत्र उरधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो (जि०) ॥ ३ ॥ इकमन ध्यावो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥ ४ ॥ अभय महासुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो । (जि०) ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

छत्रपतिथांरे पाय नमेंजी सुरनर सारे सेव । ज्योति थांरी जग जागतोजी । दुनियामें परतिख देव ॥१॥ हुंतो मोहि रह्यो-

जी ह्मांरा राज दादैरे दरबार (हुं.)
केशर अंबर केवडोजी । कस्तुरी करपूर ।
चंपो चंदनराय चंबेली । भक्ति करुं भरपूर
(हुं.) ॥२॥ पांगूलियानें पाव समापै । आं-
धलियांनें आंख । रूपहीणानें रूपदेवै दादो ॥
पंखहीणांनें पांख [हुं] ॥ ३ ॥ चंदपाटोधर
साहिबो जो । श्रीजिनकुशलसूरिंद । आठ-
पोहर थांने ओलगै जी । रंग घणें राजिंद
[हुं०] ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

सद्‌गुरूजी सुणो मोरी अरजी स०]
पहिली काम कीये बहु तेरे । आपणा बिरु-
द विचारी । पल पल चूक परी सद्‌गुरूजी ।
में मुतलबका गरजी ॥ [स०] ॥१ ॥ ध्यांन
तुमारो कबहु न ध्यायो । पुजा करी नही

री । तोई सेवकना वंछन पूर्या । आही थांरी मरजी ॥ [स०] । २ ॥ निश्चे सेतो तुमगुण गावै ॥ तुरत कटत दुख बेडी । भक्त उधार कहावत जगमें । ताहे करत हुं अरजी [स०] ॥ ३ ॥ और दनकूं में नहीं ध्याउं । शरण ग्रही में थारी । दूर थकी में भेटण आयो । विपत दशा सब तजी ॥ [स०] ॥ ४ ॥ कुशल गुरूका में हुं सेवक । लोक जाणे सब कोइ ॥ क्षमारतनकी वीनती सुणके । दरशण दीयो सद्गुरूजो ॥ [स०] ॥५ ॥ इति ॥

॥ होरीकी चालमें ॥

होरी-खेलो नेमसें धाय २ (इम चालमें.)

सद्गुरू चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरू करोरे सहाय । [सद०]

बावन वीर अनैं वलि चोसठ जोगणि। वसकीनो हर्ष लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांभा वज्र विदार पाय [सद०] ॥ १ ॥ मुलतांनमें पंचपोर महाबल । पंच नदी सादी चित्त लाय । इत्यादिक बहु परचा पूरक । गुरू समर्यां सब दक्ख जाय ॥ [सद०] ॥ २ ॥ गुरूके नामसें अडसिद्धि नवनिधि । गुरूगुण गावो सबही धाय । श्रीजिनसौभाग्यसूरि सुगुरूपर । महिर करो गुरू सुखदाय [सद०] ॥ ३ ॥ इति.

॥ पुनः ॥

नेम श्यामसें कहियौ मोरी [इस चा० में]

गुरू पुज रचोरे सुग्यानी । भली हयै भक्ति भरानी ! [गुरू०] श्रीजिनकुशल

सूरिसर साहिब । खरतरगच्छराजानी देश देशमें थानक गुरू का । शोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समांनी [गुरू०] ॥१॥ केशर चंदन मृगमद भेली । चरणांरी पूज रचांनी । धूपदीप वलि आगल ठोवी । विधविध पुष्प चढानी । भला फल भेट धरांनी [गु०] ॥ २ ॥ वाट घाटमें चरचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्रीजिनसौभाग्यसुरिके साहिब । वंछित काज करानी । सद्गुरू महिर लगानी [गु०] ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग प्रभाती ॥

श्री जिन कुशलसूरिसर साहिब । तुमहो पर उपगारी [श्री जि०] खरतरगच्छ

नायक गुणलायक। जिनचंद्रसूरि पटधारी [श्री जिन० ॥१॥ संत उधारण सुजश व-धारण। भीड भंजन अति भारी। नाम तु-मारो कुशल करण जग। वारी जाउं वार हजारी [श्री जि० ॥ २ ॥ जगवत्सल तु-मही हो जगतगुरू। करूणानिधि करतारी। कहै जिनचंद मेरेहो सदगुरू। हमहै शरण तुमारी [श्री जि०] ॥ ३ ॥

॥ पुनः ॥

श्री गणधर गुरू कुशलसूरिंदके चरण कमल पर वारो [श्री ग०] केशर चंदन अक्षत कुंकुम। जलभर कंचन झारी, देवके आगे मंगल दीपक। फूल धरुं फूलवारी [श्री ग०] ॥ १ ॥ ऐसो भांति करूं विध पूजा। आनेकै चित इकतारो। राज कहत

मेरे परम गुरुकी । बेर बेर बलिहारी [श्री ग०] ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ रेखता ॥

कुशलगुरू देखकै दरसन । मेरा दिल होत हे परसन । जगतमें या समो कोई । न देखा नयनभर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंडलै छाजै । फरसतां पाप सहु भाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घर आवै ॥२॥ इकै मुख गुण कहूं केता । मुझे विज्ञान नही एता । लालचंदकी अरज सुनलीजै । चरणकी शरण मोही दीजै ॥३॥ ॥ इति पदम् ॥

(राग केरबो.)

कुशलगुरू दरशण दीजै हो [कु०| खरतरगच्छपति कुशलसूरिंदगुरूमुजपर महिर

धरिजै हो [कु०] ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद तुमारो । इनकी अरज सुणोजे हो [कु०] ॥२॥ आधिव्याधि अरू दोखी दुशमण । ए सबदूर हरीजै हो [कु०] ॥३॥ खेमरतन सेवककुं निसदिन । सद्गुरू साधिन कीजै हो [कु०] ॥४॥ इति पदम् ॥

॥ पुनः ॥

वंसी हमारी दाजे [इस चालमें]

पूजो भजोरे भाई । गुरु महिमा योत सवाई [पू०] ॥१॥ मृगमद केशर चंदन अरचो । सुंदर पुष्प चढाई [पू०] ॥ २ ॥ भाविक जीव मिल गुरूगुण गावै । वाके सदगुरू होत सहाई । [पू०] ॥ ३ ॥ श्री जिनसौभाग्यसूरि सुगुरू मेरे निशदिन हर्ष बधाई [पू०] ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥

॥ पुनः ॥

(ढाल ॥ मालण ल्यावै फूलडा ए चाल)

॥ हुं तो अरज करूं करजोडनैजी म्हारी अरज सुणो महाराज। [सद्गुरू०] विरूद घणां छै राजरा जो। सूरि सकल सिरताज [स०] मुनिजर जोयजो साहिबा। थांरे रा· वल राणा राजवीजी। थांरा पूनिम पूजै पाय। [स०] ॥१॥ केशर अगरज कुंकुमांजी कांई मृगमद रही महीकाय [स०] मुनिजर जोयजो साहिब। ॥२॥ थांरै घुडलां रै आग- ल घुघराजो। ढुलत चमर गमहाल [स०] करण सेवै कामनीजी। कांई निरख करैजी निहाल [स०] (मुनिजर०) ॥ ३ ॥ थांरी गवी ठोडै थापनाजी कांई उ॰॰थातुर

आंबेर (स०) महिमा भलो गुरु मेडतैजी।
कांई सालूडै वाली सांगातेर ।(सद्गुरु० सु०) ॥४॥ थांरी ज्योति जगी गुरु झिगमिगेजी। कांई बधती रोढ बीकाण (स०) आशापुरण आवज्यो। थेतो देशवररा दीवाण (स० सु०) ॥ ५ ॥ ह्मांरा वीनतडी भलै मानीज्योजी ॥ कांई दादाजी दीनदयाल (स०) कुशल सदा कविराजरै ॥ कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ (स० सु०) ॥ ६ ॥ इतिपद्म ॥

(लावणीकी चालमें.)

सद्गुरु ह्मारा सरणें आयां री लज्या राखज्या (स०) पतित उधारण विरुद सुणीने आयो तुमारै पास। अब मन वंछित पुरो माह्मारा। एहीज दिलकी आशजी ॥

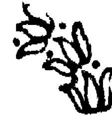
(स०) ॥१॥ काम क्रोध मद लोभ तजीने । तज दियो सब संसार । नवपदकोइक ध्यान धरीने । पाया सद्गुण पारजो ॥ (स०) ॥ २ ॥ देश देश में थुंभ विराजै । परचा जग विख्यात । इण कलु मांहै सुरतरु सरिखा ॥ प्रकट रह्या साक्षातजी ॥ (स०) ॥३। चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तं हीज देव । आण धरु शिर ताहरी । (ि करुं तुमारी सेवजी ॥ (स०) ॥ म बंधव तुं जगमें । हितकारी गुरुरा (राणा सहु जग मांहै । सेवै तुमा (स०) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण । सीधा वंछितकाज । लक्ष्मीप्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका रायजी ॥ (स०) ॥ ६ ॥ इति० ॥ संपूर्णः ॥

હાલમાંજ છપાઇ બહાર પડેલ

નવસ્મરણ તત્વાર્થાદિ



પરિષીષ્ટ



આ બુકની અંદર નવ સ્મરણ ગૂજરાતીમાં ટાઇપથી તેમજ તત્વાર્થની મૂળ ગાથાઓ બાળબોધમાં તથા તેનું પરિશીષ્ટ પણ બાળબોધ દાખલ કરવામાં આવેલ છે. પુસ્તક બત્રીશ સુપરરોયલમાં છાપાવેલ છે. તેમજ સુંદર બાઇન્ડી‧ હોવાથી ગ્રાહકને પ્રીય થઇ પડે તેવી બુક છે.

કીંમત માત્ર સાડા ચાર આના. પાંચ આન' ટીકીટ બીડનારને મોકલી આપવામાં આવશે.

☞ લખો શા. માનચંદ વેલચંદ

ગોપીપૂરા બડેખાં ચકલા

સુરત.